**HUMARI PATHSHALA हमारी पाठशाला** [1]

**- आत्मार्थी आयुषी जैन, दिल्ली**

आज हम सभी इस बात को भलीभांति समझते हैं और महसूस भी करते हैं कि **"संस्कार बिना सुविधाएं पतन का ही कारण होती हैं"**। जीवन की मुश्किल घड़ियों में धर्म के संस्कार ही काम आते हैं जो सुख शांति प्रदान करते हैं, भौतिक सम्पदाएँ और सुविधाएं तो धरी की धरी ही रह जाती हैं। अतः हमें अपने बच्चों को विरासत में सुविधाएं ही नहीं संस्कार भी देने चाहिए। इन्हीं **जैन संस्कारों और संस्कृति के बीजारोपण का एक महत्वपूर्ण साधन है-पाठशाला**। क्या होती है ये पाठशाला? पाठशाला एक ऐसा स्थान है जहां जैन धर्म की ABCD पढ़ाई जाती है (i.e. Basics of Jain Dharma)। बच्चों को धर्म से जोड़ने का ज़रिया है पाठशाला। संस्कारों की नींव है पाठशाला। या फिर यूं कहो कि **जैनों का भविष्य है पाठशाला।**

पाठशाला के संदर्भ में विशेष चर्चा से पहले हमें **पाठशाला की उपयोगिता (Need)** समझना आवश्यक है। आखिर क्यों जरूरी है पाठशाला? यदि हम आज के समय को देखते हैं तो हमारे सामने बच्चों के जीवन से संबंधित कुछ समस्याएं नज़र आती हैं जिनका समाधान है "हमारी पाठशाला"।

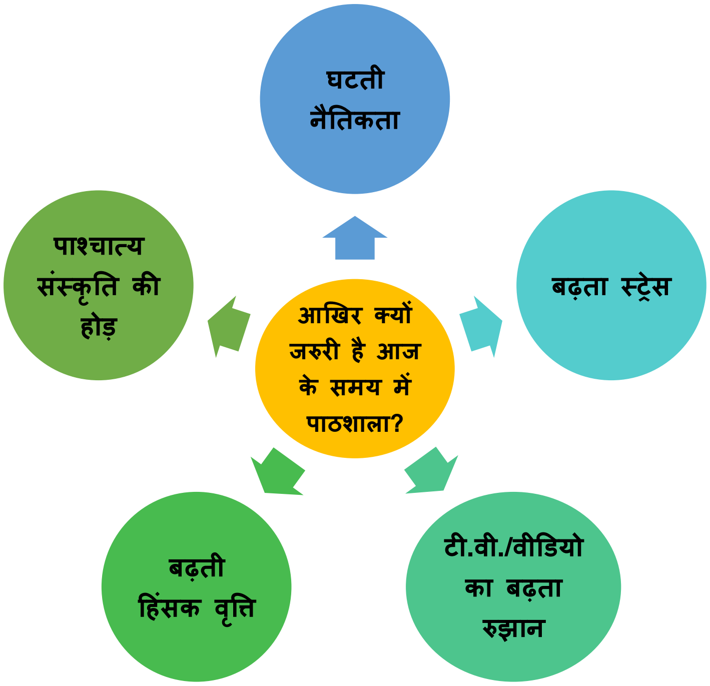


---

[1] **हमारी पाठशाला- यह लेखक के द्वारा कल्पित पाठशाला का नाम है। इस निबंध में जब भी इस शब्दावली का प्रयोग होगा तब एक विशेष प्रकार की पाठशाला, जिसकी चर्चा निबंध में की जाएगी, वह समझना।**

इन समस्याओं को कम और बहुत हद तक खत्म करने की ताकत रखती है “हमारी पाठशाला”। **पाठशाला से होने वाले कुछ सामान्य लाभ** इस प्रकार हैं-

- बच्चों की नैतिक एवं धार्मिक उन्नति
- सत्संगति का अवसर
- दैनिक जीवन (बहिरंग एवं अंतरंग दोंनो) में सुधार
- जीवन में अनुशासन आता है
- कषायों की मंदता होती है
- जिनवाणी के सिद्धांतों से परिचय होता हैं

इन्हीं कारणों की वजह से हमें **पाठशाला की उपयोगिता (Need)** महसूस होती है। क्योंकि हम इन लाभों को प्राप्त करना चाहते हैं और ऊपर लिखी समस्याओं से बचना चाहते हैं इसीलिए “हमारी पाठशाला” का प्रारंभ होता है।

किसी भी कार्य को क्रियान्वित करने से पहले हमारे मस्तिष्क में उस कार्य को करने का उद्देश्य स्पष्ट होना अति आवश्यक है। अतः इस पाठशाला की शुरुआत से पहले हमने इसके उद्देश्यों को निर्धारित किया है। यदि उद्देश्य ही स्पष्ट नहीं होंगे तो कार्य का प्रतिफल भी सही ढंग से नहीं मिल पाएगा और उद्देश्यों से भटकने की संभावनाएं भी अधिक रहती है। उद्देश्यों को द्रव्य क्षेत्र काल भाव हर दृष्टि से विचार कर ही अध्यापकों और संयोजकों द्वारा बनाया जाना चाहिए। उद्देश्यों की स्पष्टता के लिए उनको लिखित रूप में निर्धारित करना चाहिए। सभी संचालकों और अध्यापकों को इन उद्देश्यों को मध्य नजर रखते हुए ही पाठशाला की गतिविधियां क्रियान्वित करनी चाहिए।

**“हमारी पाठशाला” के सामान्य उद्देश्य (Objectives)** इस प्रकार हैं-

1. बच्चों में **धर्म के प्रति रुचि जागृत करना**।
2. जैन **धर्म के मूल सिद्धांतों को समझाना** (मात्र रटाना नहीं)।
3. **धर्म को सरल करके बच्चों के सामने रखना** जिससे बच्चे धर्म को कठिन ना समझे। धर्म में छुपे आनंद को समझें।
4. बच्चों को **जैन संस्कृति बताना, समझाना एवं सिखाना**। जिससे बच्चें उसको अपनाए।
5. बच्चों को **धर्म की जीवन में उपयोगिता** बता कर उन्हें हमेशा के लिए **जिनवाणी से जोड़ना।**

इन सामान्य उद्देश्यों को ध्यान में रखकर ही “हमारी पाठशाला" की विभिन्न गतिविधियां संचालित की जाती हैं। यह उद्देश्य हमारी गतिविधियों की सार्थकता की जांच करने में कार्यकारी रहते हैं। बहुत सी पाठशालाओं में कुछ ऐसी गतिविधियां कराई जाती हैं जो निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने में कुछ भी सहायक नहीं होती, जैसे: बच्चों को ऐसे खेल खिलाना जिनमें धर्म से संबंधित कोई चीज़ बच्चें नहीं सीखते। ऐसे खेल हो सकता है बच्चों को पसंद आए परंतु हमारा प्रयोजन बच्चों का मनोरंजन करना या मात्र टाइम पास करना नहीं है। इसीलिए पाठशाला में ऐसी गतिविधियां करना उचित नहीं है। ऐसे ही अन्य गतिविधियों के संबंध में हमें सोचना चाहिए कि क्या इसको कराने से हमारे उद्देश्यों की पूर्ति होगी या उल्टा समय, शक्ति, धन आदि की सिर्फ बर्बादी होगी। यदि हम थोड़ा सा विचार करेंगे तो हम स्वयं भी ऐसे अनेकों धार्मिक विषयों पर आधारित खेल बना सकते हैं जो बच्चों को पसंद भी आते हैं और हमारे उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक भी होते हैं।

इस तरह पाठशाला के उद्देश्यों एवं उन उद्देश्यों की महत्वपूर्णता हमने देखी। पाठशाला की गतिविधियों को सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए एक अध्यापक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्यापक क्योंकि सामान्य अध्यापक नहीं अपितु "हमारी पाठशाला" का अध्यापक है इसीलिए उसकी भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण साबित होती है। नीचे लिखी **विशेषताएं "हमारी पाठशाला" के अध्यापकों** में हम देख सकते हैं-

| | | |
|---|---|---|
| Regularity (It is a primary characteristic to make students regular). | Dedication towards Jain Dharma. | Motivated to teach as well as learn and hence becomes motivator for students as well. |
| Strong believer and follower of Jainism | Have knowledge of Jain concepts | Never directly tell students what is right or wrong, provide space to think themselves first |
| Understands the nature of children and tries to cater them accordingly. | Have patience to listen the student's point of view. | Have a positive attitude towards every problem. |

ऐसा अध्यापक यदि पाठशाला पढ़ायेगा तो अवश्य ही "हमारी पाठशाला" में बच्चे सीखेंगे और हम उन उद्देश्यों को पूरा होते हुए भी देख सकेंगे जो हमने पाठशाला शुरू करने से पहले निर्धारित किए थे। **"हमारी पाठशाला" में अध्यापक बच्चों को पढ़ाते कैसे हैं?** इसके लिए कुछ बिंदु नीचे लिखें गए हैं-

- **पाठशाला में पढ़ाए जाने वाले विषय-**
    - चारों ही अनुयोगों से संबंधित विषयों को समाहित किया जाता है। उदाहरण के लिए कुछ विषय इस प्रकार हैं- तीन लोग, कृत्रिम चैत्यालय, पुराण पुरुषों की कहानियां, देव शास्त्र गुरु, भेद-विज्ञान, सात तत्व, छ द्रव्य, अष्ट मूल गुण आदि।
    - विषयों का चयन किसी एक पुस्तक विशेष को आधार रखकर नहीं किया जाता अपितु विभिन्न जिनवाणी और ग्रंथों के आधार से किया जाता है।
    - विषय मात्र धार्मिक ही नहीं अपितु नैतिक विषयों को भी समाहित किया जाता है। जैसे: सत्संगति, ईमानदारी आदि।
    - विषयों के विवेचन के लिए विभिन्न साधनों का उपयोग करने का प्रयास किया जाता है जैसे:- projector, white board, charts
    - आवश्कतानुसार विभिन्न विषयों से संबंधित PPTs और videos बनाकर उनके माध्यम से पढ़ाया जाता है।
    - कक्षा में चर्चित विषय की उपयोगिता, और प्रयोगिकता पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
- **अध्यापकों और विद्यार्थियों की सहभागिता-**

  कक्षा में अध्यापक के साथ-साथ विद्यार्थियों की भी एक सक्रिय भूमिका होती है। बातचीत को एक साधन बनाकर उसका ज्यादा से ज्यादा प्रयोग किया जाता है जिससे बच्चों को अपनी समझ एवं शंकाएं व्यक्त करने का मौका दिया जाता है।
- **विभिन्न गतिविधियों (activities) का इस्तेमाल-**

  एक मात्र lecture method से ही बच्चों को नहीं पढ़ाया जाता बल्कि विभिन्न गतिविधियों का सहारा लिया जाता है जैसे: descriptive writing, drawing, role play, group activities, story telling, games, poster making, essay writing etc.

  उदाहरण के लिए यदि हमें रात्रि भोजन त्याग पर बात करनी है तो पहले हम बच्चों को कुछ समय देकर ग्रुप में बातचीत करके रात्रि भोजन से होने वाले नुकसान और उसके त्याग से होने वाले फायदों को लिखने के लिए बोल सकते हैं। इससे अनेक लाभ होते हैं,

बच्चों की सहभागिता बनी रहने से उनका ध्यान भी कक्षा में बना रहता है तथा अध्यापक को भी बच्चों के सोचने का स्तर पता चलता है। विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में विभिन्न योग्यताओं का विकास भी होता है साथ ही साथ बच्चों को उनकी रूचि के अनुसार कार्य करने का अवसर भी मिलता है।

- **बच्चों के स्तर के अनुसार उनको पढ़ाया जाता है-**
अलग-अलग उम्र के बच्चों को पढ़ाने के लिए अलग-अलग तरीकों का इस्तेमाल किया जाता है जैसे 3 से 7 साल के बच्चों को कविताओं और कहानियों के माध्यम से पढ़ाया जाता है। 8 से 12 साल के बच्चों को खेल और PPT के माध्यम से पढ़ाया जाता है। 13 से 17 साल के बच्चों के साथ ज्यादा से ज्यादा discussion और writing activities का प्रयोग किया जाता है।

"हमारी पाठशाला" की अन्य विशेषताएं-

- **पढ़ने का कोना (जैन लाइब्रेरी)-** पाठशाला का एक कोना लाइब्रेरी के रूप में प्रयोग किया जाता है जिसमें विभिन्न कहानियों की पुस्तकें, महापुरुषों के चरित्र, नैतिक पुस्तकें एवं कहानियां लघु बोध कथाएं, जैन सिद्धांतों पर आधारित सरल भाषा में लिखी पुस्तकें और कुछ जैन गेम्स का कॉलेक्श रखा हुआ है। लाइब्रेरी में पढ़ने के लिए बच्चों को योग्य समय दिया जाता है तथा लाइब्रेरी की पुस्तकें घर ले जाकर पढ़ने का प्रावधान भी रखा गया है।
- **लिखने का कोना-** यह पाठशाला का वह स्थान है जहां बच्चों को लिखने का मौका दिया गया है। एक खाली चार्ट पेपर लगाया गया है जिसमें बच्चे अपने रोज के नियम और कक्षा में आयी कोई अच्छी बात लिख सकते हैं। इसके माध्यम से बच्चे एक दूसरे से प्रेरणा लेते हैं और नियम लेने के लिए उत्साहित रहते हैं तथा कक्षा में आई बातें भी दोहर जाती है।
- **Bulletin Board**- यह पाठशाला में कराई गई activities और बच्चों के काम को दिखाने का एक स्थान है। इससे बच्चों को प्रोत्साहन मिलता है और अन्य सहधर्मियों को भी पाठशाला की गतिविधियों का पता चलता है, जिससे प्रभावना होती है। वर्तमान में यदि कोई पर्व चल रहा हो तो बच्चों को पर्व सम्बंधित चीज़े लिखकर लगाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।
इन सब के ज़रिये हमारा उद्देश्य बच्चों को अलग-अलग माध्यम से धर्म सिखाना और समझाना है। अतः बच्चों को व्यर्थ की साज, सजावट पर ध्यान देने के लिए प्रेरित नहीं

किया जाता।

उपर्युक्त लिखी विशेषताओं से पाठशाला में बच्चों की सहभागिता बढ़ती है अतः बच्चें पाठशाला आने के लिए उत्साहित होते है और पाठशाला में पढ़ना पसंद करते हैं। और इसी कारण बच्चों को अब यह पाठशाला मात्र पाठशाला नहीं **हमारी पाठशाला** लगती है।